उर्वशी कर्णवाल

जन्मस्थान- सहारनपुर (उ.प्र.)
शिक्षा-एम.ए, बी एड, एल एल बी
प्रकाशन- मैं प्रणय के गीत गाती (गीत संग्रह)
सम्मान- अनेक सम्मान एवं पुरस्कार
सम्प्रति- अध्यापन कार्य

लोग अभिनय कर रहे हैं

नाट्यशाला सा जगत यह
लोग अभिनय कर रहे हैं।
घट रहा जीवन अहर्निश
बूँद से हम झर रहे हैं।

मृत्तिका के घट निरन्तर, दम्भ से हैं चूर दिखते ।
इस जगत में हैं चतुर्दिक,छल कपट भरपूर दिखते।
तत्व जो उत्थान में है, एक दिन अवसान तय है।
हिमशिखर का अंततः फिर,सिन्धु में होना विलय है।
हो विदित यह हर नदी के सागरों में घर रहे हैं।
घट रहा जीवन अहर्निश, बूँद से हम झर रहे हैं।

हैं प्रबल अति शक्तिशाली
आदमी के स्वार्थ धागे।
कृत्य हों यदि पाप पूरित
तब कहाँ चैतन्य जागे।
बात यह सामान्य सी है
मार्ग में कंटक मिलेंगे ।
हम इसी अवरोध से डर
डगमगाएंगें हिलेंगे।
पाप कर निर्भीकता से
दण्ड से कब डर रहे हैं।
घट रहा जीवन अहर्निश
बूँद से हम झर रहे हैं।

पुण्य को ठहराव देकर, पाप से की सन्धियाँ हैं।
सुप्त होकर खो गयीं क्या, बोध की सब ग्रंन्थियाँ हैं।
हैं तिमिर मय कक्ष मन का,ज्ञान के दर खोज डाले।
दीप ऐसा चाहिए जो, भर सके अंतर उजाले।
मृत्यु से पहले सभी क्यों, पाप के घट भर रहें हैं ।
घट रहा जीवन अहर्निश, बूँद से हम झर रहे हैं ।

जीवन सतत चलता रहे

प्रातः निकलकर सूर्य भी
नित शाम में ढलता रहे।
है सुख कभी या दुख मगर
जीवन सतत चलता रहे।

द्वय चक्र हैं चलते निरन्तर किन्तु सुख कमतर लगे।
विधि लेखनी चलती परस्पर दुख किसे सुन्दर लगे ?
मानव प्रकृति होती भला दुख के लिए तैयार कब।
इच्छुक सदा सुख का रहे पर मानता आभार कब ।
इस चाह में नित व्यक्ति क्यों बस रात-दिन गलता रहे।
है सुख कभी या दुख मगर जीवन सतत चलता रहे।

सुख तो सदा सुन्दर लगे
चाहें सभी जन सुख सदा।
दुख में परीक्षण धैर्य का
पर दुख लगे ज्यों आपदा।
अब सुख मिले या दुख मिले
स्वीकार करना चाहिए ।
आशीष प्रभु का मानकर
आभार करना चाहिए ।
रत कर्म में हो जब मनुज
क्यों हाथ वह मलता रहे।
है सुख कभी या दुख मगर
जीवन सतत चलता रहे।

आपात हो अवसाद हो पर आस को जीवित रखो।
सुख चाहिए यदि आपको तृष्णा तनिक सीमित रखो।
संतोष जीवन धन हमेशा बात सच्ची है खरी ।
विश्वास तजिए मत कभी हरि हरें दुख शर्वरी ।
दुख में मनुज की आस का शुभ दीप लघु जलता रहे।
है सुख कभी या दुख मगर जीवन सतत चलता रहे।।

ISSN:2583-8849